भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

लोकोक्तियाँ

लोक-प्रसिद्ध उक्तियाँ लोकोक्तियाँ हैं। सूत्र एवं संक्षिप्त वाक्य में समाये पीढ़ी दर पीढ़ी के अनुभवों से युक्त इन लोकोक्तियों की भाषा यथार्थ होती है; इनमें आम बोलचाल या दैनिक व्यवहार में आने वाले शब्द प्रयुक्त होते हैं। इ सीलिये लोकोक्तियों को जनता की आवाज भी कहा जाता है। लोकोक्तियों के दायरे में कहावतें, मुहावरे, पहेलियाँ, बच्चों के खेलगीत तथा ज्ञान, भक्ति, नीति आदि से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के पद्बन्ध आते हैं; किन्तु शैली, रचना एवं व्यंजना की दृष्टि से उनमें बहुत कुछ भेद होते हैं। इस अध्याय में भक्ति, नीति, ज्ञान, लोक व्यवहार इत्यादि से सम्बन्धित पद्बन्धों को रखा गया है।

भक्ति, ज्ञान एवं नीति :

१. ज्ञानी होना चाहो तो गंगा स्नान करो,
ध्यानी होना चाहो तो धरम को बढ़ावो जी।
जीने को चाहो तो जीवों पर दया करो,
सत्य बोलना चाहो, इन्द्री वश लाओ जी।
भागने को चाहो, तो भागो बुरे कामों से,
आने को चाहो, तो श्रीराम शरण आवो जी।
नाचने को चाहो तो रघुनाथ आगे नाच करो,
गाने को चाहो तो श्रीराम लीला गावो जी।

२. जसहु नहि लीन्हों जप-तप नहि कीन्हों,
जंत्र -मंत्रहु नहिं चीन्हों, न कहायो बड़ दानी में।
कीन्हों ना प्रसंग, सतसंग साधु-संतन संग,
निपटे न दानी, भय पाप के निशानी में।
विप्र को न माने, वेद-भेदहु न जाने,
दया धर्म को न माने, रहे मन के गुमानी में।
तो नाहक नर जन्म लीन्हों, अवनि कर बीच महिं,
बूड़ि क्यों न मरे, उल्लू चुल्लू भर पानी में।

३. अंधरन के आगे कहीं रूप का दिखाइबे के,
वहिरन के आगे कहीं तान का सुनाइबो,
धोखे दगाबाजन से प्रीति का लगाइबे को,
सोम्हवन के द्वार पर जांचबे का जाइबो।
मउगन के आगे मरदानी करबे का,
लड़ने की कायर से सुजस का पाइबो।
पढ़ता मुनेसर कवि गूंगन से बोलबे का,
खोलिए ना जौहर जहाँ जौहरी न पाइबो।

४. जोगी रोगी भक्त बावरा, ज्ञानी फिरै निखट्टू,
सांसारिक को चैन नहीं, जिमि सराय का टट्टू।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

५. साधु सज्जन कनक भरा टूट जूट सौ बार,
दुर्जन घड़ा कुम्हार के, एके घक्का भड़ाक।

६. साई सबको देत है, जाको जैसी भाग,
हंस मोती देत है, दिया चकोरन आग।

७. पिंगल पढ़कर क्या करे, तीन गुन से हीन,
उठकी बैठकी बोलना, लिए बिधाता छीन।

८. कर्म कराही ज्ञान घृत, मन मैदा के सानी,
ब्रह्म जोति जगाइ के अनूप मिठाई छानी।

९. संगत के गुन होत है, संगत से गुन जाय,
बांस फांस मिसिरी, एके भाव बिकाय।

१०. पगिया बान्हो केस संवारो, तेल लगे जुल्फन में
दया धर्म ना तन में मुखड़ा क्या देखा दरपन में।

११. पाप से धन बढ़त है, पन्द्रह बीस पचीस,
पाप ही से धन घटत है, नाती पूत सहित।

१२. धुआँ के धरोहर, ओ बालू के भीत,
मत लगाई ओछरन से प्रीत। (ओछरनउओछ, छोटा, नीच व्यक्ति)

१३. कोई लठधारी, कोई जटधारी, कोई दसो इन्द्रिय घस डारी,
कहे हो लंदा, सुनो बेलंदा, खोपड़ी-खोपड़ी गत नारी। (नाड़ी)

१४. करमे खेती करमें नारि, करमे मिले कुटुम दुइ चार।

१५. धन के धमण्ड जरा मन से आप दूर कीजिए,
दौलन खाजाना, माल सभी छोड़ जाना है।
हुज्जत लड़ाई कुछ करने का काम नहीं,
नाहक में हित-मित्र से बैर कर जाना है।
पोथी पुरान वेद शास्त्र हम देख चुके,
खाली सिया राम नाम से ही तर जाना है।

१६. कठिन जग हम ठानि लियो, दरब ना किछु हाथ,
पाप से उपहास होइहें, पत मोर राखऽ हो रघुनाथ। (पत=प्रतिष्ठा)

१७. तोहरे राम तोहे सूझत नाहीं,
दहिया में जइसे घीव छिपल बा, बिना मथले मिलत नाहीं।
मेंहदी में जइसे रंग छिपल बा, बिना पिसले निकलत नाहीं।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

१८. तुलसी तुलसी सब कहे, तुलसी जंगल के घास,
महिमा भए रघुनाथ की, कि हो गए तुलसीदास।

१९. लिखनी, नारी, पुस्तके, परहस्ते नष्ट-भ्रष्टे।

२०. मेढ़ा जब पीछे हटे, वे ना रह छप्पकन्त,
बैरी जब हँस के बोले, तबे संभारो केंत।
(मेढ़ाउभैंसा, साँढ, बोका; ये बिना मारे नहीं रहते, यदि किसी को देखकर, वे थोड़ा पीछे हटें।)

२१. उजला-उजला सब भला, उजला भला न केस,
नारि नवे नहिं रिपु डरे, न आदर करहि नरेश।

२२. संगत कीजै बड़न के बनत-बनत बन जाय,
नवकुंजल के सीस पर अजा पत्री खाय। (नवकुंजल=हाथी, अजा =बकरी।)

२३. हंस गए सरवर दह सुगा आम के डाड़, (दह=नदी)
जाहु विप्र घर आपना, मंत्री काग सिआर।

२४. रात अन्हरिया पंथ ना सूझे, खाल ऊँच बराबर बूझे।
मुये करकसा नारि ओ कम चाल के टट्टू,
मुये परऋवा बैल ओ मरद निखट्टू। (परऋा=आलसी, निखट्टू= अकर्मण्य)

२५. बात के मरद, रहन के गोरी, दूध के भैंस, चाल के घोड़ी।

२६. बिना गर के गावऽ गीत, भादो में उठावऽ भीत।
माघ मास में सूते पौवा, कहे घाघ इ तीनों कौआ।

२७. खेत बिगाड़े खरतुआ, सभा बिगाड़े क्रूर।
धर्म बिगाड़े लालची, केंचन हो गए धूर।।

२८. ऊँच दाँत की कामिनी दूजे के घर जाय।
लोक लाज राखे नहीं, जग में करे हँसाय।।

२९. घर के खड़ा हर बा चार, घर में गिहथिन, गउ दुधार।
अरहर दाल, जड़हन के भात, गागल निमुआ ओ घीव तात। (जड़हन=रोप धान)
खाँड़ दधि जो घर में होय, बांकी नयन परोसे जोय।
कहे अम्बिका सर्वे झूठा, उहाँ छाड़ि इहवें बैकुण्ठा।

३०. उपासल मनइ के बिहान ना होला, ढेर दिन पहुनाइ में मान ना होला।
देव -देव कइला से दान ना होला, मुदइ आ रोग कबो बेजान ना होला।
बिना घामी वर्षा के घाम ना होला, सुन के महटिआवेउ अनजान ना होला।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

३१. भूख ना देखे रूखा भात, नींद ना देखे मुरदा घाट।
पिआस ना देखे धोबी घाट, प्रीत ना देखे जात कुजात।

३२. ठुनमुन ठुनमुन बैल करो, हँसमुख करो नारी,
गोंयड़ा में खेत करो साव करो भारी। (गोंयड़ा=घर के पास)

३३. पुरुआ पछुआ बहे बेयार, बिधवा नारि करे सिंगार,
कहे घाघ का करीं विचार, इ बरसीउ करी भतार।

३४. रावल, राजपूत, रामजनी, राजा और रूम
राह किनारे घर बसावे, छ रकारे दुःख।

३५. आधी रात के सातू खाय, बिनु नारी ससुरारे जाय,
बिना कीच के चढ़े पउआ, कहे घाघ इ तीनों कउआ।

३६. नया जोतिषी बैद्य पुरान, रेख उठन्ते सुभत जवान,
लड़िका ठाकुर बूढ़ देवान, काम बिगड़े साँझ बिहान।

३७. बिना बैल के करे खेती, बिना वर देखे ब्याहे बेटी
द्वार पराये गाड़े थाती, इ तीनों मिल पीटे छाती।

३८. बैल तोनारा, खेत ढेलारा, तिरिया भगठी, पुत्र लुहारा, (लुहारा=लफेंगा)
कर्म फूटे त परे कपारा।

३९. बढ़ा बाल, मैला कपड़ा और करकसा नारि,
सोने को धरती मिले, नर्क निसानी चारि।

४०. पान पुराना घी नया औ कुलवंति नारि,
चौथा पीठ तुरंग का स्वर्ग निसानी चारि।

४१. उड़न बूड़न कूदन नाहीं, सील के पीसल तिअन नाहीं,
आदि घी ना अन्ते दही, ताहि रसोइ के गिरल कहीं।
(उड़न=चिड़िया के मांस, बूड़न=मछली, कूदन=खंसी के मांस, पीसन=मसाला)

४२. गड़न्त में ओल, उड़न्त में बगेरी, चलन्त में रेहु। (उत्तम होते हैं)

४३. सब तीरथ बार-बार गंगा सागर एक बार।

४४. राग रसोई पागरी, बनत बनत बन जाय
बिगड़त में कुछ देर नहीं, राख भसम होई जाय।

४५. गेहूँ गोरस गुर एक है, चाहत है सब कोइ,
जाहि विधाता दाहिने, ताहि मय्यसर होइ।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

४६. मनला के मनौती, सनगर के हुँक्का,
बैमान खातिर अदालत, राड़ खातिर जूता।

४७. राजा, धीमड़, वेश्या, पासी,
इ घर खइले जम्हपुर वासी। (इनके यहाँ नहीं खाना चाहिए)

४८. फल में पपीता, नारी में सीता अउर ग्रंथ में गीता के बात कुछ अउर बा।

४९. जो न कभी गलती करे, उसे भगवान कहते हैं,
जो गलती करके स्वीकार ले उसे इंसान कहते हैं,
जो अनजान में गलती करे उसे हैवान कहते हैं,
जो जानबूझ कर गलती करे उसे शैतान कहते हैं।

५०. सौख राय के चार इयार, (सौख राय= सुखी व्यक्ति)
बाघ राय, टकराय, गरमी, सुजाक राय।

५१. नसे, उपासे, मांसे, तीनों सर्दी नाशै।

५२. खा के मूते, सूते बायीं, काहे के बैद्य बसावे गायीं। (गायीं=गाँव में)

५३. आपन कुल ओ विप्र कुल, तस विधवा वो कुँआर,
इ ससे जो दगा करे डूबे कुल परिवार।

५४. केंचन कलस कर गहे, नित उठ बरिसत मेह,
सिर पर जटा दरिद्र के, बूँद पड़त ना देह।

५५. बनिया दाता ठाकुर हीन बैद के बेटा व्याधि न चीन्ह,
पंडित चुप्पा पतुरिया मइल, घाघ कहे घर पांचों गइल।

५६. हँस के बोले, ठुनुक के रोये, राह चले त जूड़ा खोले,
हाथ उठा के करे जम्हाई, ऊछिनार बाजा बजाई।

५७. एक जल जल हऽ एक नारि गड़ही,
एक नारी नारि हऽ एक नारि गदही।

५८. जब ब्याह की चाह उठी मन में, तब सोरह, बीस, पच्चीस में कीजै,
तीस भयो तब खीस भयो, चालिस में कभी नाम न लीजै।

५९. सौ में सूर हजार में काना, सवा लाख में ऐंचा ताना,
ऐंचा ताना कहे पुकार, कोइसा से रहिहऽ होशियार।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

६०. खट किरवा बन लीलदाग, ओ कपूत रिसिआय, (खटमल)
बांझ मेहर का स्सना, टपका सहा न जाय।

६१. गइल पेड़ जहाँ बगुला बइठे, गइल राज जहाँ चुँगला पइठे।

६२. कहीं जोगी जोग करे, कहीं करे भोग,
कहीं जोगी वैद होखे, कहीं होखे रोग।

६३. साँवा खेती बाह बनीजी, भइंस कुरंग बिकाय,
अहिर मित्र ना कीजिए कि अवर जाति मर जाय।

६४. मित्र वहीं मर जाय जो वक्त पर काम न आवे,
वंश वहीं मर जाय, जो कुल में दाग लगावे।

६५. आन्हर का जाने कि साँझ ह कि भोर हवे
राह का जाने कि साध हवे कि चोर हवे।

६६. मांगो उसी से जो देदे खुशी से, जो कहे ना किसी से।

खेती-बारी/मौसम :

१. आवत आदर ना कियो जात न दीन्हों हस्त,
बीच में माघा ना बरसे त का करिहें गृहस्त?

२. दक्खिन लडके लडका, उत्तर ठनके देव,
भइंस ऊँच्च छानिए, कह गए सहदेव।

३. सावन पुरवा भादो पछुआ आसिन बहे इशान,
कहे घाघ घाघिन से कि कहवाँ धरबू धान?

४. सावन में पछुआ, सीक डोले त महि मरे, गाछ डोले त बजर परे।

५. सावन मांह बहे पुरवैया, बैला बेंच कीन धेनु गैया।

६. दखिन दिसा लौका लउके उत्तर गरजे देव,
इ बरखा बाँव ना जाई, कह गइले सहदेव।

७. रोहिणी रोवे, मिरगिटाह टरे, कुछ दिन अद्रा जाय,
कहे घाघ घाघिन से जे स्वान भात ना खाय।

८. रात में बोले भंडरी, दिन में बोले सियार
कहे घाघ धाघिन से निश्चित परे अकाल।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

९. शुक्रवार की बदरी, रहे शनिश्चर छाय,
कहे घाघ सुन घाघिनी, बिनु बरसे नहिं जाय।

१०. रात निबदर, दिन में छाया, कहे घाघ कि बरखा गया।

११. गीला खेत जे बोए कोई, ताके बीज न अंकुर होई।

१२. नित उठ खेती नित उठ गाय, जे ना देखे ओकर घरहु से जाय।

१३. रोहिन में घर रोहा नाहीं।

१४. जे न दे सोना, से दे खेत के कोना।

१५. कहि गइले रावन, केला रोपिहऽ सावन।

१६. माघे जाड़ ना पूसे जाड़, जब बयार बहे तबे जाड़।

१७. आधा माघे कमर कांधे।

१८. मैदे गेहूँ, ढेले चना। (गेहूँ के लिए महीन मिट्टी और चना के लिए ढेलाह खेत अच्छा होता है)

१९. गहि के धरीं, ना त आरी पर बइठीं।

२०. उत्तम खेती जो हलगाहा, मध्यम खेती जो संगरहा।
जे पूछे हर बही कहाँ, बिया डूब गइल जिनकर तहाँ।

२१. पनही पहन के हल गहे, सूथन पहन नहाय। (सूथन=साफ, अच्छा कपड़ा)
कहे घाघ इ तीनों भकुआ, बोझ लिये जो गाय। (गाय= गाना गावे)

२२. तीन पानी तेरह कोड़, तब देखऽ ऊँखी के पोर।

२३. बहुरा से दिन लहुरा, खिंचड़ी से दिन जेठ।

पशु-पक्षी से सम्बन्धित :

१. कान कसोटन सोकन बान, तीन छोड़ जनि किनिहऽ आन।
जब देखिहऽ बइरिया गोल, उठ-बैठ के करिहऽ मोल।
जब देखिहऽ मैना, झट से दीहऽ बैना।

२. बैल के चार छेट - सींग, पाँव, पूँछ, कान। (अच्छा)

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

३. माथे महोर (लाल) पोंछ चांवर (चौड़ा)
अपने जाई पड़ोसिन के भी ले जाई। (बैल के पय)

४. साठ लगाइ हर बैल कीन लो, बो लो साठी धान।
पहिले खाए चिरइ चुरुंगा, तब खाए किसान।

५. माघ के टूटल मरद, भादो के टूटल बरद।

६. बैल कीनी धामर धूमर, भइस कीनी हाँड़ी
गोर तिरिया से साादी करीं, सेज करी सिंगारी।

७. बैल किनी अउवा ढेबर भइंस कीनी पाड़ी,
कुल देख के शादी करीं, गोर हो चाहे कारी।

८. न चीन्ह त नाया कीन।

युग-सन्दर्भ में :

१. मुखिया हो के का करबऽ जब गाँव के गाँव भकोले बा,
पागल होके का करबऽ जब सनकाह इ संवसे टोले बा।
माथ पीट के का करबऽ जब सबे समुंदर सोखे बा,
सोरे आना के लेखा से तेरह आना लोग बोके बा।
माल मुंहे तर बा, बाकिर चाँप दीहल बा, (मुँहेतर=सामने ही, चाँप दीहल=छुपा देना)
बोका लोग खाइ कइसे, मुँह जाब दीहल बा।
बोका लोग के मुँह खुली ना,
ठहरे हुँड़ार चाँपत रही, डरे केहू बोली ना।

२. नवका जमाना के नवका छवारिक लोके,
नवका पहिरावा के अंडर में वीयर बा।
देखनी हजामत, तीन ताला पर चढ़ के,
ऊपरा सब टीम टाम, निचला सब दीयर बा। (दीयर=उजाड़, खस्ताहाल)
पेटीकोट लेडी बा, लूंगी जनानी छाप,
कान्ह पर के साल स्टुडेन्ट के निसानी बा।
पाउडर के पोतला से मुँहवा पर पेंट भइल,
सेंटेड , रिफाइन सब बबुअन के लाइन बा।
मुँह के बनावट से बबुनी लोग हार गइल,
देखला से बबुये लोग बबुनी से फाइन बा।

३. आजकल के पंचपसेरी, बदलत में नइखे तनिको देरी।
जहाँ जेइसन तहाँ तेइसन, इ ना करे से पंच केहिसन?
रात -दिन जो घेंट ममोरी, सबे बोले ओकरे ओरी।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

४. सास भइली लौंड़ी पतोह मलकाइन
बाप के बेटा कहल ना माने, नया जमाना आइल।

५. अंजोरिया के आशा में अन्हरिया अंगेज लहनी,
धीरे से दुःख दर्द के परहेज लहनी।
बोली मीठ बतासा जइसन चेहरा बा देखनउक
कवना लजत पर ए बबुआ भइलऽ चिअरबउक।

गांजा :

गांजा के प्रकार : मरिचइया, मनिपुरिया, अलीबम, अजमल, चीपड़, बालूचर, गद्दी, भूसी, सुल्फा। इसमें 'भूसी' जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है गांजा का चूर्ण, छंटा हुआ सामान्य माल है, और 'सुल्फा' भांग को खूब मलकर तैयार किया जाता है।

गंजेड़ियों के शब्द : गांजा तैयार करने के लिए 'अमनियां' कइल, अथवा 'लठल' कहा जाता है। गांजा जब कड़ा होता है तब उसे 'चूस', मधुर होने पर 'मिठास', बेकार हो जाने पर 'भकमीला', या 'फसल्ली', हल्का होने पर 'फींका', अत्यधिक कड़ा होने पर 'नटीफार', पीने के लिए 'चेतावल' या 'राग- भोग लगावल' कहा जाता है। गांजा पीने वाले स्वभावतः अधिक भोजन करते हैं, और इसके लिए 'ओल्हल' शब्द का व्यवहार करते हैं। गांजा पीकर जब नशेबाज 'भकुआ' जाते हैं, तब वे जो निर्गुन छेड़ते हैं, वह कुछ इस प्रकार का होता है-

फूल लोर्हे गइलीं हो बारी, सारी मोर अंटकेला डार्ही, एकिया हो रामा।
बिना प्रभु सरिया केहु ना छोड़ावे, एकिया हो रामा।
लोर्हत- लोर्हत हो बारी, चढ़ली पिया के अटारी, एकिया हो रामा।
बिना प्रभु सरिया केहु ना छोड़ावे, हो रामा।

इसी बीच कोई दूसरा नसेबाज बोल उठेगा - ''कवन गंजेड़ी गांजा दे गइले हो सइंया बउरास'।

गंजेड़ियों की बैठक नियमतः तीन समय होती है-सुबह- दैनिक क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर, कूला दतुवन करके, कुछ मुख में डालकर पानी पीकर, फिर दोपहर और पुनः शाम को।

गांजा के सामान में गांजा, सुरती, साफी, चीलम, गुल अैर एक माचिस ही पर्याप्त है। 'गुल' के लिए फुस के घर के कोनचारे या टाट की रस्सी, अथवा फटे-पुराने चट्टी का उपयोग होता है। गुल-सुलगने को 'गुल-गलल' कहते हैं। गंजेड़ी लोग बिना पानी के गांजा मलने पर 'रूखा' और पानी के साथ मलने पर 'उसना' बोलते हैं।

गंजेड़ियों के कुछ बोल :

१. गाँजा पीने से क्या नफा, अँखिया लाली दिल सफा।

२. गाँजा नहीं कहर है, कलेजा जार देता है, आँखों का लहर है।

३. गाँजा नहीं गूंजी है, भोजन करने वाला कूँजी है।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

४. गाँजा पी- पी के बलमुआ अँखिया लाल कइले बा।

५. गाँजा है गुरु ज्ञान के बूटी मल-दल इसे पिया करो, खैनी (सुरती) ख्याल से दिया करो।

६. गाँजा पिये राजा तमाकू पिये चोर, खैनी खाए मूरख थूकेला चारूओर।

७. गाँजा के जे करे अदगोई- बदगोई, ओकरा वंश में रहे ना कोई, रहबो करी त लंगड़ा लूला होई।

८. एक चिलम में ऐसी तैसी, दू चिलम में ताजा, तीन चिमल में गांजा-गूंजी, चार चिलम में राजा।

९. गाँजा-गूंजी में एक आदमी, घटले-बढ़ले दू आदमी, बजर परे त तीन आदमी।

१०. जे न पिये गाँजे की कली, ओ लड़का से लड़की भली।

११. बम शंकर दुस्मन साले को तंग कर।
बम चंडी अगरधत्ता, मारो दिल्ली लूटो कलकत्ता।
बम शंकर कैलासपति बेर्हा परस लाखपति।

१२. बम शंकर तन गनेस, माल भेजऽ हर हमेश।
बम शंकर लहरी, गाँजा भेजऽ एक डेहरी।
शम्भो कैलास के राजा, दम लगा जा।

१३. बम शंकर भूल न जाना, काशी छोड़कर दूर न जाना।

गाँजा पीने से हानि :

गांजा पिये गुरु ज्ञान घटत है, माल घटे कुछ अन्दर का,
सूख -पाक कर लक्कड़ भए मुँह भए जैसे बन्दर का,
गाँजा के पीना छोड़ दो ए गँजेड़ी भैया।
सांझ-सबेरे तोहरे कारन आवे सबै पिवैया,
बाह -बाह कर खूब सराहे, फोकट के पिवैया,
गाँजा के पीना छोड़ दो ए गँजेड़ी भैया।
दस-दस चीलम गाँजा पीवे, कुछ ना करे कमैया,
दमा -खाँसी जोर करे तो कहते बप्पा-दैया,
गाँजा के पीना छोड़ दो ए गँजेड़ी भैया।
गाँजा पी के देह बिगाड़े भइले सूख खटैया,
अलख लगा के दम लगावे, खोंखे बूढ़े भैया,
गाँजा के पीना छोड़ दो ए गँजेड़ी भैया।
गहना-जेवर बान्हे धइले बेचले खेती-बरिया,
बाप दादा के नाम डूबवले, गांजा के पिवैया,
गाँजा के पीना छोड़ दो ए गँजेड़ी भैया।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

भाँग और विज्या :

भाँग के लिए एक उत्कृष्ट शब्द 'विज्या' भी प्रचलित है। किन्तु 'भाँग' और 'विज्या' में अन्तर है। 'भाँग' में सिर्फ भांग का पत्ता होता है, परन्तु 'विज्या' में अनेक तरह के पदार्थ पड़ते हैं; जैसे- पुराने भाँग का पत्ता, जिसे छाँव में सुखाकर रखा गया हो, काहू, कुल्फा, कासनी, पोस्ता, खीरा का बीज, छाँव में सूखा हुआ गुलाब का फूल, धनिया, मीर्च, इ लायची (छोटी), सौंफ। इसे सील पर खूब बारीक पिसा जाता है। भँगेड़ियों का मानना है कि इसकी अच्छी पिसाई का यही प्रमाण है कि लोहा को उठाया जाय तो वह भाँग से चिपक कर सील को भी उठा ले। ऐसी पिसाई साधारण व्यक्ति द्वारा संभव नहीं। इ सके लिए पहलवान शरीर चाहिए। इतनी अच्छी पिसाई में कम से कम २ घंटे का समय तो लगेगा ही। फिर इस भांग या विज्या का गोला खांय या इ से घोलकर पीयें। इसे और उत्तम बनाने के लिए इसमें सूखा फल- किसमिस, पिस्ता, बादाम, आदि भी डाला जाता है। मिश्री के साथ दूध में घोलने पर इसकी गुणवत्ता में चार-चाँद लग जाती है। कहा भी गया है -

ले भंग दूध में घोला, तो भंग बना अनमोला।
खा भंग नहा के गंग, जमा दे जंग, दिखा दे कुंडी सोटा-लोटा।
मन मैल मिटे, तन तेज बढ़े, दे रंग भंग का गोला।

विज्या/भांग के गुण :

विज्या जो पीवे सिंह को पछाड़ डाले,
स्वानहु जो पीवे तो मारे गजराज को,
बनिया जो पीवे तो कोट किला ढाहि करे,
सुरमा जो पीवे तो चोट करे राज पर,
कामिनी जो पीवे तो केंत संग केलि करे,
केंतहु जो पीवे तो चाहत सुख-साज को,
कहत है निपट-निरंजन विज्या में एता गुण,
बगुला जो पीवे तो उड़ाय मारे बाज को।
मरिच मसाला सौंफ कासनी मिलाय, भांग खाय, अनेक रोग को उबारती,
जारती जलंदर, भकेंदर, कटोदर, बबासीर सन्निपात विदन विदारती,
कहे शिवरामदास खाज को खराब करी, छिक छै छजन, असुर को निकालती,
पिनस प्रमेह विष बावन तरह के रोग, कमर दरद को गरद कर डारती।

विज्या/भांग सेवन के नियम :

चार महीना घोर-घार, आठ महीना गोली,
जब मिआज मस्त होवे, सुनी आत्मा के बोली-
पहिल पहरवा जे नर पीवे, कर गंगा स्नान,
आसन मारि सिंहासन बइठे कर शम्भू के ध्यान,
सुनो भाई भांग के लक्षण।
दूसर पहरवा जे नर पीवे, कर रोटी के आस,
रोटी पर जब रोटी तूरे, जस चिड़िया पर बाज,

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

सुनो भाई भांग के लक्षण।
तीसर पहरवा जे नर पीवे, कर सभा के आस,
बीच सभा में गरजन लागे, जस जंगल के बाध,
सुनो भाई भांग के लक्षण।
चउथ पहरवा जे नर पीवे, कर सेज्या के आस,
चारों पाँव खटाखट बोले, जस घोड़े का टाप,
सुनो भाई भाँग के लक्षण।

भाँग का सेवन करने वाला व्यक्ति काफी भोजन करता है, क्योंकि उसकी पाचन-क्रिया दुरूस्त रहती है। इ सीलिए कहा गया है-''भँगिया जनि देहु गँवारन के बटुली के भात संघारन के''। भाँग लेने के बाद दिशा की तैयारी हो जाती है- ''भाँग के गोला पेट में, हाथ के लोटा खेत में।''

भँगेड़ी की आसक्ति :

कहे अड़भंगी दास सुनऽ हो जोगी जी बात,
भंगिया के पानी मोके नित उठ आनि दऽ।
भंगिया के अंजन-मंजन, भंगिए के मुख-मंजन,
भंगिया के पेड़ा जलपान के मंगाई दऽ।
भंगिये के दाल-भात, भंगिये के बारा-बरी,
भंगिया के सुअन जलपान के मंगाई दऽ।
ए ही थोड़ा बात के निहोरा करीं बार-बार,
थोड़ा सा भाँग मोरा झोरी में भराई दऽ।

सुरती सेवन से हानि :

१. सुरती मुख गंध देत, सुरती मुख सुरत लेत,
सुरती की गरमी दो नयन में समातु है।
सुरती से हानि होत, सुरती से निन्दा होत,
सुरती बिनु सभा बीच मन पछ्तातु है।
कहे साधु सरन मानो, सुरती अशुभ जानो,
दुनिया के गलीजन में सुरती बोआतु है।

२. सुरती में इनकर मनवा बसल बा,
खाए के सुरती, माँगे के भीख
ना देला पर सुरती, इ पादे ले बीख
इनका हरदम घटल बा।
सुरती में इनकर मनवा बसल बा।

३. सुरती आइल सुरूजपुर से रहे जगत में छाय,
जेकरा तन पर बस्तर ना सेहु सुरतिया खाय।

४. सुरती कहे कि सुनर नारि, पहिले लेउ करेजा जारि।
दुसरे नैन जोत हरि लेव, तीसरे जल्दी बूढ़ करि देव।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

चौथे कहे एक ऐब हमार, जे माँगे से हाथ पसार।
पांचवे जात-पात ना पूछे, चिकनो जगह पर पच-पच थूके।

बीड़ी से हानि :

कहिले से सुनऽ सुनऽ, छाडऽ बीड़ी से इयारी,
चाउर चना कीने तहार बीड़ी के बेपारी।
डेहरी में खुलल बाटे दूसरो दुआरी,
बीड़ी देला, कोमलऽ करेजवा के जारि।
अउरी में लुतिया से जरे सुनर सारी,
लिखतऽ में कलम हमार देत बा हुँकारी।
बारऽ बारऽ कहतारे अमिका सिंह पुकारी।

मछली के प्रशंसकों के बोल :

रोहू के मुण्ड में प्रयाग बसत है, पोंछ बसत है काशी,
कांटे -कांटे देवानां, पत कवरे एकादसी।
चेल्हवा चहुँ तीरथ भरम रही, सिधरी शिवलोक के ध्यान धरी,
टेंगर से प्रभु टेक लिया, मुंगरी रथ साज विमान चली।
हरदी मरिचा पिस मेथी के फोरन, तेल जरी,
भाई -बन्धु सब बइठ के बरनत, जेंवत में सब देह तरी।
मछली महारानी, तोहि कहाँ ले बरनों !
जिन रातहि दिन गंग नहाई,
परबत तोड़ हिलोरत चलत, धीमड़ जाल पसार के मारत।
घर -घर से निकली युवती, सब काँख तर छीप जाँति के आयों,
लहसुन मरिचा देइ के कड़ुआ तेल में छेंवकैहों,
ताको खाय से काहे न कुल परिवार तरि जइहों !
सिधरी से सिद्ध होत है गरई ज्ञान के मुण्ड।
जो चाहे बैकुण्ठ को, सो खाए रोहू के मुण्ड।

मछली-विरोधियों के बोल :

रोहू के मुंडी, मोय के पेट, दही के ऊअर गूड़ के हेठ।
कासी करवट देइ के, कोटि गऊदे दान,
तिलभर मछरी कारने, सकलो नरक निधान।
मीन मांस जो करहि अहारा, चौसठ जनम गिद्ध अवतारा।
किस मास में क्या सेवन क्या परहेज?
चइत चिउरा, बैसाखे तेल, जेठे लहसुन असाढ़े बेल।
सावन साग, भादो दही, कुआर करैला, कार्तिक मही।
अगहन जीरा, पूसे धना, माघे मिसिरी, फागुन चना।
चइत चना, बैसाखे बेल, जेठ सयन, असाढ़े खेल।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

सावन हरा, भादो चीत, कार्तिक मूली, कुआर मीठ। (चीत=चिरैता)
अगहन माह खाओ तेल, पूस में करो दूध से मेल।
माघ मास घीउ खींचड़ खाए, फागुन उठके प्रात नहाय।
(चैत्र में नीम खाने का भी विधान है)।
राम राम लड्डू, गोपाल नाम घीव,
हरि नाम मिसिरी घोर-घोर पीव।
स्थान-विशेष के सम्बन्ध में
चम्पारन के धनहर खेती, एक से एक रोहू के पेटी (रोहू के पेटी =उपजाऊ खेत)
चम्पारन में भात बने ला, बटुला छोड़ बटुली महके ला।
चम्पारन में थाना बगहा, तहाँ न लागे माल के पगहा,
रेल के सिलपट उहें बनेला, चम्पारन के लोग हँसे ला।
धूपसागर-धूपसागर अंगुठी के नगीना,
जे आवे एक दिन खातिउ रह जाय छ महीना।
(धूपसागर बिहार के गोपालगंज जिले का एक गाँव है)
दरबे दरभंगा, असबाबे टेकारी, (दरबे=द्रव्य, असबाबे=अस्त्र-शस्त्र, टेकारी=एक राज्य)
दरबे दरभंगा, राज में बेतिया, बनिया में हथुआ, लोहा में तमकुही।

मिश्रित पद्बन्ध :

१. कुल बांके तिरिया सोहे, दूध बांके पारी,
कौल बांके मदर सोहे, चाल बांके घोरी । (कौल = बात के पक्का)

२. बर बीसहि बीसहि बीसा, वर ताकहि एके दिशा
वर गले वैजन्ती माला, वर घेर चांदनी चमके,
सात भइया के चौदह लाठी।

३. प्रीतम बसे पहार पर, मैं जमुना के तीर,
अब तो मिलना कठिन है, पाँव पड़ा जंजीर।

४. धिरिक पिआ जिअना कि साग रोटी तिअना,
धिरिक पिआ के दार्ही, लइका रोई बारी।

५. छोटी चुकी खिरकी चन्दन छिरकी, झिर-झिर बहे बेयार
ए सइयाँ मोहे जाड़ लगे कि चादर दीं ओढ़ाय।
चादर ह तोर ऐसी-तैसी चोलिया बुटेदार
ए घरी के कारन गोरिया हो गइल जुलाब।

६. सुतल रहलीं अमवा तर, महुआ तर गोर,
झनर -झनर मोर झबिया करे, हम जानी हरि मोर।
दिया बार छोटी ननदी, महलिया पइसे चोर।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

७. भदई के चिउरा, भंइसी के दही,
खइला पर मन करे दिअरे में रहीं।

८. चमथा के मार्हा चमथा के दही,
एहिसन मन करे चमथे में रहीं (चमथा-दरभंगा जिले में)

९. खिंचड़ी के चार इयार, दही, पापड़, घी, अंचार।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.